षष्ठ अध्याय

उपसंहार

अध्याय : 6

उ प सं हा र

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास लेखिकाओं में शशिप्रभा शास्त्री, मेहरूनिस्सा परवेज, कृष्णा सोबती, निरूपमा सेवती, कृष्णा अग्निहोत्री, मृदुला गर्ग, सूर्यबाला, ममता कालिया, शिवानी, राजी सेठ, मालती जोशी, मन्नू भंडारी, मंजुला भगत, मालती जोशी, कुसुम अन्सल आदि महत्वपूर्ण नाम गिनाये जा सकते हैं। इन महिला उपन्यास लेखिकाओं ने महानगरीय नारी जीवन-सत्य पर प्रकाश डालने का काम किया है।

इन महिला लेखिकाओं ने नारी की यौन-विकृति, नारी के यौन-संबंध, नारी के व्यक्तित्व का बौनापन, नारी की तरक्की का रहस्य, नारी के सेक्स और प्रेमसंबंध, पति-पत्नी के बीच का ठंडापन, पति-पत्नी के बीच का तनाव, संबंधहीनता, अवैध यौन-संबंध, अकेलेपन की पीड़ा, संत्रास, व्यर्थताबोध, अस्तित्व का संघर्ष, नौकरीपेशा नारी की पीड़ा, विवाहित स्त्री के विवाहबाह्य उन्मुक्त संबंध, नवीन नैतिकता, शून्यताबोध, मध्यवर्ग तथा निम्न-मध्यवर्ग की अभावग्रस्तता, बॉस की एकाधिकारशाही के कारण नौकरी पेशावाली नारी का होनेवाला शोषण, माँ-बेटी संबंध, माँ-बेटा संबंध, अंधविश्वास, नारी का पारिवारिक धरातल पर शोषण, सास-बहू के कटू संबंध आदि तथ्यों के दर्शन अपने उपन्यासों के माध्यम से पाठकों को करा दिये हैं। इन तथ्यों में से कई तथ्यों पर प्रकाश डालने का काम कुसुम अन्सलजी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है।

साठोत्तरी कालखंड में नारी जीवनमूल्यों में परिवर्तन लक्षित होता है। इस युग में नारी शिक्षा-दीक्षा का प्रसार और प्रचार तेज गति से हुआ। शिक्षित नारी घर की चार दीवारें लांघकर समाज के मुक्त प्रांगण में विहार करने लगी। इस कालखंड

की नारी शिक्षा, विज्ञान, उसके हितैषी कानून आदि के कारण अधिक आत्मनिर्भर और निर्भय बनी। इसीके परिणामस्वरूप नारी के परम्परागत जीवनमूल्यों में काफी परिवर्तन लक्षित होने लगे। इस युग की नारी प्रेम, यौन-संबंध तथा नैतिकता के प्रति नये आयाम को तलाशती रही। असंगत जीवनमूल्यों की धरोहर पर नारी का भटकाव शुरू हुआ। इस युग की नारी का प्रेम और यौन-संबंधों के प्रति दृष्टिकोण नया रूप धारण करने लगा। प्रेम मिलन तथा प्रेम बिखराव के घेरे में नारी अटकती रही। विवाहपूर्व प्रेम, विवाहोपरान्त प्रेम, यौन-विकृति आदि पर भी साठोत्तरी उपन्यास लेखिकाओं ने प्रकाश डाला है। कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों में भी इनमें से कई तथ्य नज़र आते हैं।

आज की नारी का सम्मिलित परिवार के प्रति देखने का दृष्टिकोण, मातृत्व धारणा के प्रति नयी दृष्टि, प्रेममित्रक, यौन-संबंधों में रूचि, विभक्त परिवार में अभिरूचि, अर्थार्जन के नये-नये तौर-तरीके, धर्म और संस्कृति के प्रति नारी की परिवर्तित दृष्टि, नयी नैतिकता पर उसके द्वारा दिया जाने वाला बल, अस्तित्व बोध की अवधारणा, वैवाहिक जीवन से मुक्ति पाने की ललक, पारिवारिक जिम्मेदारियों से अलग होने की भावना, आजीवन अविवाहित रहकर जीवन यापन करने की रूचि, आदि विविध पहलुओं के दर्शन आज की आधुनिक और उच्चवर्गीय नारियों में दिखाई देने लगे हैं। इन पहलुओं के दर्शन कुसुम अन्सल के आलोच्य तीन उपन्यासों में देखने को मिलते हैं।

आज के अर्थप्रधान आधुनिक युग में अर्थार्जन के लिए नारी घर से बाहर चल पड़ी है। वह घरेलु जिम्मेदारियों के साथ साथ नौकरीपेशा में पड़नेवाली जिम्मेदारियाँ भी समर्थता के साथ ढो रही है। इस दोहरी भूमिका मे उसका जीवन घुटनशील बनता है, जिससे उसकी मानसिकता में काफी परिवर्तन भी लक्षित होने लगते हैं। इस स्थिति में प्रेम और यौन-संबंधी उनकी धारणाओं मे परिवर्तन दिखाई देने लगते है। नौकरीपेशा नारी विवाहपूर्व अपने आर्थिक लाभ के बारे में सोचती है और अपने बॉस या अन्य दप-तर के पुरूषों से संबंध स्थापित करती हैं और विवाहमूल्य को नकारकर अकेली अविवाहित रहने का दृढ संकल्प करती हैं।

..... केवल आत्मतुष्टि के लिए यौन-संबंधों को स्वीकार करती है। कुसुम अन्सल के "उस तक" की मुक्ता इसी प्रकार की युवती लगती है परंतु उस पर विवाहपूर्व अनिल से जबरी होने के कारण उसकी मानसिकता में परिवर्तन होकर वह अपनी जीवन सरिता को पूर्ण मोड़ देकर अकेली रहने का निर्णय लेती है। "अपनी अपनी यात्रा" की सुरेखा भी इसी तथ्य पर उतरती है परंतु दहेज के कारण मिन्ना का होनेवाला शोषण उसे अविवाहित रहने के लिए बाध्य करता है। मुक्ता और सुरेखा अपनी यौन-तुष्टि के लिए यौन-संबंधों का स्वीकार करना चाहती है।

विवाहोपरान्त परपुरूष से प्रेम और यौन-संबंध रखने की प्रवृत्ति आज की नारियों में बलवती होती जा रही है। ऐसी नारियों ने परम्परागत वैवाहिक मूल्यों को तोड़ डाला है और नारी जीवन के परिवर्तन को नया मोड देने का प्रयत्न किया है। भारतीय संस्कृति में पति-पत्नी की एकनिष्ठता को महत्वपूर्ण रूप में माना गया है। इस एकनिष्ठता में आज परिवर्तन लक्षित होने लगे हैं। कुसुम अन्सल ने अपने "एक और पंचवटी" उपन्यास में साधवी के माध्यम से इस तथ्य को स्पर्श किया है। साठोत्तरी अन्य महिला उपन्यासकारों ने भी अपने उपन्यासों में इस बात को उठाया है। प्रेमी के साथ विवाह सम्पन्न न होने के कारण विवाहोपरान्त ये नारियाँ पतिगृह में रहकर भी प्रेमी मिलन के इन्तजार में लगी रहती है। विवाहोपरान्त यदि पति वैवाहिक सुख की उपलब्धि में असमर्थ हो तो ऐसी नारियाँ अपने पति के भाई की ओर सम्मोहित होती हैं। कभी कभार पति के पथरीले स्वभाव से ऊबकर नारी रसिक पुरूष से जुड जाती है। परित्यक्ता नारी भी परपुरूष की तलाश में लगी रहती है, विधवा नारी की भी यही स्थिति होती है। ऐसे कई कारण होते हैं, जिसके कारण नारी के विवाहोत्तर प्रेम संबंध जारी रहते हैं। कुसुमजी ने यहाँ इनमें से एक पहलु पति के पथरीले स्वभाव से ऊबकर देवर के साथ यौन-संबंध जोड़नेवाली साधवी की कथा-व्यथा को "एक और पंचवटी" के माध्यम से चित्रित किया है। साधवी को परपुरूषगामी बनाने की पूरी जिम्मेदारी कुसुमजी ने उसके पति यतीन पर छोड़ डाली है। भारतीय संस्कृति के देवर-भाभी के पवित्र रिश्ते

में टूटनशीलता दिखाकर मूल्य-बिखराव की स्थिति पर चिंता व्यक्त की है और विवाहमूल्य टूटन पर प्रश्नचिन्ह खडा कर दिया है।

आज मूल्य परिवर्तन की हवा तेज गति से बह रही है। इन मूल्य परिवर्तनों की स्थिति में समाज परिवर्तन का महत्वपूर्ण स्थान है। नर-नारी के जीवनमूल्यों में परिवर्तन लक्षित होने लगा है। आज की नारी जीवन के संकीर्ण दायरे से गुजर रही है जिससे उसके जीवनमूल्यों में विविधता के दर्शन हो रहे हैं। आज की नारी परम्परागत मूल्यों को तोड़ती हुई अपने मतानुकूल अपने जीवनमूल्यों को अपना रही है। यौन-तृप्ति से निर्मित सुख इसके पीछे का प्रमुख कारण होने के कारण इस स्थिति का निर्माण हो रहा है। "एक और पंचवटी" की साधवी इसी मूल्य से पीडित लगती हैं।

कुसुम अन्सल के उपन्यासों में नारी पात्र अपने जीवनमूल्यों के प्रति सचेत-सजग दिखाई देते हैं। पुरातन रूढियाँ, परम्परागत संस्कृति से उत्पन्न होनेवाली घुटन, संत्रास, अंधविश्वास आदि को तोड़ने के लिए प्रतिबद्ध लगती हैं मुक्ता, सुरेखा, साधवी इसके अच्छे उदाहरण हो सकते हैं।

साठोत्तरी कालखंड में नारी में विशेष जागृति लक्षित होती है। वह अपने अधिकार सुरक्षा और स्वतंत्रता के प्रति सतर्क नजर आती हैं। वह नये मूल्यों की स्वीकृति करती हुई आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनने की होड़ में लगी हुई है। सुरक्षा, स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, अधिकार प्राप्ति की होड़ में लगी आज की नारी का शोषण हर पड़ावों पर होता जा रहा है। इस प्रकार के शोषणों से मुक्ति पाने के लिए आज की नारी भटकती जा रही है। इस स्थिति में कभी वह यौन-विकृति का शिकार बनती है, तो कभी असंगतियों की चक्करघिन्नी में अटक जाती है। कुसुम अन्सल ने "उस तक" की मुक्ता, "अपनी अपनी यात्रा" की सुरेखा और "एक और पंचवटी" की साधवी के माध्यम से इस तथ्य पर यथार्थ ढंग से प्रकाश डाला है।

कुसुम अन्सल महिला उपन्यासकारों में एक महत्वपूर्ण उपन्यासकार मानी जाती है। उनकी रचनाओं में बदलते नारी संदर्भों को वाणी मिल चुकी है। कुसुमजी

की आलोच्य औपन्यासिक रचनाएँ यह प्रमाणित करती है कि आज की नारी तत्कालीन प्रश्नों से सार्वकालिक प्रश्नों की ओर अग्रसर हो रही है। विषय वैविध्य की दृष्टि से कुसुमजी ने जीवन के अनेक बिंदुओं को स्पर्श किया है। सामाजिक विडम्बनाओं पर व्यंग्य किया है। उन्होंने प्रेम की अनुभूति को नयी विश्वसनीयता में गढ़ाकर विवाह संस्था की एकरसता को चुनौति देकर विवाह संस्था के खोखलेपन को उभार दिया है। अनुभूतिजन्य सत्यपक्ष को कुसुमजी छिपाना नहीं चाहती, बल्कि अपने कोमलतम अनुभवों को भी उन्होंने सहज और स्वाभाविक ढंग से अपनी औपन्यासिक रचनाओं में अभिव्यक्त किया है। कुसुमजी के उपन्यासों की कथाएँ नारी मनोविज्ञान से जुडी हैं। समाज तथा परिवार में व्याप्त नारी जीवन का शोषण और इस शोषण से निर्मित नारी जीवन की ज्वलंत समस्याएँ कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों के प्रमुख विषय लगते हैं। उनके आलोच्य उपन्यास में इन सभी तथ्यों पर प्रकाश पडता है। अन्सल के आलोच्य उपन्यासों में परिवर्तित सामाजिक संदर्भों के दर्शन होते हैं। "एक और पंचवटी" 1985 में कुसुमजी ने एक ऐसी नारी की कहानी का चित्रांकन किया है जो समाज की परम्परागत लीक पर न चलकर एक नया मार्ग तलाशती है। लेखिका ने अत्यंतिक कुशलता से साधवी और यतीन के बिछड़ाव के काल को वनवास काल मानकर इस काल के दौरान विक्रम के साथ बिताये गये बस्ती के निसर्गरम्य बंगले के क्षेत्र को साधवी ने पंचवटी माना है। सीता की पंचवटी और साधवी की पंचवटी में तादात्म्य स्थापित करके कुसुमजी ने अपनी प्रयोगधर्मिता का परिचय पाठकों को करा दिया है। प्राचीनता में आधुनिक युगबोध की झलक दिखाते हुए कुसुमजी ने बदलते सामाजिक संदर्भों पर,पकाश डाला है।

कुसुम अन्सल ने दहेज के रूप में बदलते हुए सामाजिक संदर्भों पर भी प्रकाश डाला है। "अपनी अपनी यात्रा" उपन्यास के माध्यम से इस तथ्य पर लेखिका ने गहराई से चिंतन किया है। प्रस्तुत उपन्यास की केंद्रिय पात्र सुरेखा का काली होने के कारण विवाह तय न होना, उसकी बहन मिन्ना का विवाह होने पर ससुरालवालों द्वारा दहेज को लेकर उसका छल करना, उसे शारीरिक, मानसिक क्षति पहुँचाना, मिन्ना की दुर्गति को देखकर सुरेखा में विवाह संस्था से अरुचि निर्माण होना, विवाह

बंधन को न स्वीकारने का सुरेखा द्वारा दृढ निश्चय करना, विवाह तय होने की प्रक्रिया में उसके द्वारा अनेक आघात बर्दाश्त करना, विवाह सम्पन्न होने पर होने वाले नये घावों को बर्दाश्त करने की क्षमता का उसमें न होना, इन सभी हालातों को नजरांदाज करने पर पता चलता है कि आजीवन विवाहित रहने का सुरेखा का निर्णय तथा "उस तक" की मुक्ता का अविवाहित रहने का निर्णय बदलते सामाजिक मूल्यों के गवाह लगते हैं। आज दहेज के रूप में परिवर्तन होकर वरमूल्य की प्रथा का चोला इसने पहना है। जीवन साथी चुनने के लिए सीमित क्षेत्र, कुलीन विवाह की माँग, शिक्षा और व्यक्तिगत प्रतिष्ठा आदि का लाभ वर-पिता उठाकर दहेज को प्रोत्साहित कर रहे हैं। कुसुम अन्सल ने "अपनी अपनी यात्रा" की मिन्ना के माध्यम से यह विशद किया है कि दहेज की प्रथा ने कन्याओं के वैवाहिक जीवन दुःखी किया है और दाम्पत्य जीवन में तनाव लाया हैं। इच्छा विरूद्ध विवाह के विपक्ष में कुसुमजी है। उनके मतानुसार इच्छा विरूद्ध विवाह होने पर जबरन पति-पत्नी को एकसाथ रहना पडता है। पारिवारिक बंधनों का पालन करना पडता है। माँ-बाप जिसके साथ लडकी को जुडाना चाहते हैं उसके साथ उसे आजीवन रहना पडता है। इसके खिलाफ विद्रोह करने पर लोग युवती को चरित्रहीन समझते हैं। इसी तथ्य पर कुसुमजी ने मनचाहे विवाह का प्रस्ताव प्रस्तुत करके पाठकों के सामने बदलते सामाजिक संदर्भ को रखा है और इस दहेज की पीडा से युवतियों को अलग कराकर अंतर्जातीय विवाह का प्रस्ताव रखा है, परंतु समाज इसका विरोध करता है। "अपनी अपनी यात्रा" का यदु इसाई लडकी के साथ विवाह करके माँ-बाप से अलग रहता है। यदु के माता-पिता इस युवती के साथ यदु के आन्तर्जातीय विवाह को विरोध करते हैं।

विधवा विवाह के रूप में नवयुवकों की मान्यताओं में भी परिवर्तन लक्षित होने लगा है। यह बदलते सामाजिक संदर्भ का अच्छा उदाहरण हो सकता है। इस तथ्य पर कुसुमजी ने अपने उपन्यास "एक और पंचवटी" के वीरेन के माध्यम से प्रकाश डाला है। वीरेन भी मानता है कि एकाध युवती के पति कम उम्र में चल बसे तो वह दूसरे की पत्नी बनने का हक क्यों न प्राप्त करें। हमें ऐसी लड़कियों

को जानकर उन्हें सम्मान और प्रेम देना चाहिए। यदि पुरूष पत्नी की मृत्यु के उपरान्त दूसरी शादी करने का अधिकार प्राप्त करता है, तो पत्नी दूसरा विवाह क्यों नहीं कर सकती। ऐसी विधवाओं को उनके बच्चोंसहित स्वीकारना चाहिए। वीरेन की ये बातें परिवर्तित मूल्यों का प्रबोधनपरक विचार लगता है, जो कुसुम अन्सल ने विधवा नारी जीवन की दयनीयता को मिटाने के लिए प्रस्तुत किया है।

आज की आधुनिक महानगरीय नारी पुरूष शरीर की आवश्यकताओं का इन्तजाम करने में जुडी हुई देखने को मिलती है। अन्सल ने "अपनी अपनी यात्रा" की मधुर के माध्यम से इस बात पर प्रकाश डाला है। मधुर द्वारा स्वतंत्र विचारप्रणाली का अनुकरण किया जाना, शरीर की आवश्यकताओं के लिए पुरूष का स्थान उसके द्वारा निश्चित करना, उसके द्वारा असाधारण ढंग से रोमांसों के किस्से सुनाना, उसके द्वारा सेक्स को जीवन की एक साधारण भावना मानना, उसके द्वारा संभोग को एक साधारण-सी बात समझना आदि बातों से नारी यौन-संबंधों की प्रणाली में आये सामाजिक बदलावों के दर्शन होते हैं। आज समाज में ऐसी कई मधुर होगी जो सेक्स और संभोग को सहज प्राप्य मानती होगी। नारी के इस परिवर्तित सेक्स संबंधी मूल्य पर कुसुमजी ने गहराई से चिंतन किया है।

साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में बदलते पारिवारिक संदर्भों पर भी चिंतन किया हैं। अन्सल के उपन्यास भी इसके अपवाद नहीं हो सकते हैं। आज महानगरों में संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। रिश्तों में आत्मकेंद्रितता के दर्शन होने लगे हैं। पारिवारिक नाते-रिश्ते टूटने लगे हैं। सास का बहू के प्रति और बहू का सास के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार शुरू हो रहा है।

आज की महिला उपन्यासकारों ने एकाकी नारी जीवन की कथा-व्यथा को वाणी दी है। आज अकेलेपन को नारियाँ स्वीकार करने लगी है। वह सभी प्रकार की बाधाएँ सहकर एकाकी जीवन व्यतीत करना चाहती है। उन्हें ये पता चला है कि विवाह करने पर भी अकेलापन मीट नहीं जाता बल्कि बढ जाता है। अन्सल ने "अपनी अपनी यात्रा" उपन्यास के पात्र मधुर और सुरेखा के माध्यम

से यह स्पष्ट कर दिया है। ये दोनों नारी पात्र एकाकी रहना चाहते हैं। उन्होंने विवाहित शिव के अकेलेपन को और विवाहित मिन्ना के अकेलेपन को नजरांदाज करके यह निश्चय किया है कि वैवाहिक जीवन भी व्यक्ति का अकेलापन दूर नहीं कर सकता है इसलिए वे अविवाहित रहना चाहती है।

कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों में विचार वैषम्यवाले दाम्पत्य जीवन की कथा-व्यथा को "अपनी अपनी यात्रा" और "एक और पंचवटी" द्वारा वाणी देने का काम किया है। "अपनी अपनी यात्रा" के शिव-मंजरी का दाम्पत्य जीवन विचार वैषम्य से युक्त है। दोनों का व्यवहार समांतर रेखाओं की भाँति कभी एक नहीं हो पाता है। शिव भारतीय तो मंजरी पाश्चात्य सभ्यता में रंगी हुई आधुनिक नारी है। वह सिगरेट भी पीती है और पाश्चात्य ढंग के कपड़े भी पहनती है।

"एक और पंचवटी" के साधवी-यतीन दाम्पत्य जीवन में एकरसता नहीं। यतीन पैसे के पीछे पड़ा हुआ है तो साधवी अपने अस्तित्व की तलाश में भटकती है। इस घुटन को तोड़ने के लिए साधवी मायके चली जाती है। दाम्पत्य जीवन टूट जाता है। अन्सलजी ने इन दो उदाहरणों द्वारा आज के परिवर्तित दाम्पत्य जीवन के संदर्भों पर प्रकाश डाला हैं। जिससे विवाहबाह्य संबंध स्थापित करने की प्रवृत्ति में बढ़ौत्री होती जा रही है, इस पर सोचा है।

आज दाम्पत्य जीवन में अविश्वास और संदेह बढ रहा है। पति-पत्नी के मन में एक दूसरे के प्रति उत्पन्न शंकाएँ, सुखी दाम्पत्य जीवन में जहर घोल रही है। इस तथ्य पर कुसुमजी ने "अपनी अपनी यात्रा" के शिव-मंजरी के माध्यम से स्पष्ट किया है। शिव के प्रति मंजरी के मन में शंकाएँ भरी हुई है। वह सुरेखा पर संदेह करने लगती हैं।

साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध अनेक स्तरों पर विविध आयामों के साथ नज़र आ रहे हैं। आज के बदलावपूर्ण जीवन में यौन संबंधों की संभावनाएँ, यौन-संबंधों से उत्पन्न द्वंद और अंतर्द्वन्द पहले से कई मात्रा में सूक्ष्म और गहरे बनते जा रहे हैं। कुसुम अन्सल के आलोच्य तीन उपन्यास इस बात

की गवाह लगते हैं।

स्त्री-पुरूष संबंध मानव जाति का एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। साठोत्तरी काल में नारी की मानसिकता एवं समाज और परिवार में उसकी स्थिति में परिवर्तन आने से स्त्री-पुरूष संबंधों में भी क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। परिवेश के प्रति प्रतिबद्धता के फलस्वरूप बदलते हुए स्त्री-पुरूष संबंधों का चित्रण कुसुम अन्सल के आलोच्य हिन्दी उपन्यास साहित्य में गहराई से हो चुका है।

आज़ादी के बाद भारतीय संविधान ने नारी को पुरूष के समान अधिकार प्रदान करा दिये। शिक्षा प्राप्त नारी आत्मनिर्भरता के सपने देखने लगी। इसी के फलस्वरूप उन्होंने नोकरी में प्रविष्ट होने का निर्णय लिया। नौकरीपेशा नारी को समाज में सम्मान प्राप्त होने लगा। नौकरीपेशा नारी को विवाह संस्था में प्राधान्य प्राप्त होने लगा। अभिभावकों ने तथा घर-परिवार के लोगों ने इस काम में नारी को बढावा दिया, परिणामस्वरूप स्त्री-पुरूष को दूसरे से मिलने के परखने के अवसर प्राप्त होने लगे। स्कूल, कॉलेज, दफ्तर, क्लब, रेस्तराँ आदि में स्त्री-पुरूष एक दूसरे के संपर्क में आने लगे और उनके संबंधों के नये-नये आयाम खुलते गये। नारी का घर-बाहर दायित्व बढने लगा। आत्मनिर्भर नारी विद्रोह का वरन करने लगी। शिक्षा के कारण नारी को चिंतन के नये नये आयाम उपलब्ध हुए। नारी की नयी परिधि में बदलाव की स्थिति पर साठोत्तरी उपन्यास लेखक-लेखिकाओं का ध्यान आकर्षित हुए बिना नहीं रहा और इन्होंने विविध संदर्भों में यौन-संबंधों का चित्रण करना शुरू किया जो परिस्थितिजन्य और परिवेशनुकूल लगता है। इन यौन-संबंधों के बदलते परिप्रेक्ष्य से निजी व्यक्तित्व की चाहत रखनेवाली तनावग्रस्त पत्नी के, तनावग्रस्त दाम्पत्य, संबंधों में ऊब, पति-पत्नी के बीच तीसरे का प्रवेश, दुराचारी पति का स्वार्थ सिद्धि के लिए पत्नी का दुरूपयोग, विवाह-विच्छेद के बाद यौन-संबंध, नारित्व एवं मातृत्व की चाहत की तृप्ति के लिए स्थापित यौन-संबंध, पति-पत्नी के नये मूल्य परिधि की दासता से स्थापित यौन-संबंध, विवाहोत्तर यौन-संबंध, विवाहपूर्व यौन-संबंध, ऊबकाई से निर्मित यौन-संबंध, स्वार्थ के आधार पर स्थापित यौन-संबंध,

देहाकर्षण से निर्मित यौन-संबंध, नये मूल्य का शिकार बनकर स्थापित किए-गए यौन-संबंध, स्त्री-पुरूष दोस्ती से निर्मित यौन-संबंध, पति-पत्नी की मृत्यु के बाद विधवा-विधुर के यौन-संबंध, नारी शोषण से निर्मित यौन-संबंध आदि यौन-संबंधों के विविध आयाम साठोत्तरी उपन्यास में लक्षित होते हैं। कुसुम अन्सलजी ने भी अपने आलोच्य उपन्यासों में ऐसे यौन संबंधों की कई परतों को खोलने का सफल प्रयत्न किया है।

कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों में विवाहपूर्व यौन-संबंध, पत्नी से ऊबकर से निर्मित यौन-संबंध, नौकरीपेशा नारी से स्थापित यौन-संबंध, जोर-जबरदस्ती से स्थापित यौन-संबंध, पति से ऊबकर पत्नी द्वारा स्थापित यौन-संबंध, नये मूल्य से निर्मित यौन-संबंध आदि के दर्शन होते हैं। इन संबंधों का गहराई से चित्रण कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों में हुआ है। संक्षिप्त में अन्सल के उपन्यासों में हमें समाज के बदलते संदर्भों के बहुविध रूपों के दर्शन होते हैं।

कुसुम अन्सल के उपन्यासों के अनुशीलन से यह स्पष्ट होता है कि उनके नारी पात्र प्रेम और यौन-संबंधों में अधिक सतर्कता दिखाते हैं। अविवाहित रहने का निश्चय करने पर भी यौन-संबंधों की परिपूर्ति में प्रयत्नशील हैं। "उस रात" की मुक्ता और "अपनी अपनी यात्रा" की सुरेखा ऐसे पात्र हैं। "एक और पंचवटी" की साधवी विवाहोत्तर यौन-संबंध रखती है। परंतु लेखिका ने इस संबंधों में आधुनिक नारी को जिम्मेदार न ठहराकर आज की सामाजिक व्यवस्था और पारिवारिक व्यवस्था तथा आज के पति को अधिक दोषी ठहराया है और लेखिका ने इन नारियों का पक्षधर बनकर विवाह संस्था पर लगाये जानेवाले प्रश्नचिन्ह पर चिंतन किया है।

अन्सल के आलोच्य उपन्यास मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर खडे होने के कारण इन उपन्यासों में फ्रायड, एडलर के सिद्धान्तों के अनुकरण पर उनके नारी पात्र चलाव करते हैं। इन नारियों में यौन-लालसा उभरकर आती हैं परंतु अतीत की कई दुर्दैवी घटनाओं के परिणामस्वरूप उनकी यौन-भावनाएँ कुंठित बनती हैं। ये विवाह को नकार कर केवल मित्रता के रूप में यौन-संबंध रखना चाहती है। मुक्ता और सुरेखा के जीवन में अनेक पुरूष प्रेमी आते हैं वे उन्हें चाहती जरूर हैं परंतु उनसे विवाहबद्ध

होना नहीं चाहती कारण मुक्ता पर बचपन में अनिल द्वारा जबरी हुई थी तो सुरेखा ने मिन्ना की दहेज के कारण होनेवाली दुर्गति देखी थी। इसी दुर्घटना के परिणामस्वरूप ये दोनों नारियाँ दुर्बल मानसिकता की कायर बनकर अविवाहित रहना चाहती हैं। कुसुमजी ने इन नारियों को अविवाहित रखकर विवाहोपरान्त शोषण से बचाने का प्रयत्न किया है। इन नारियों में यौन-विकृति के दर्शन तो नहीं होते हैं परंतु मुक्ता, सुरेखा ये दोनों नारी पात्र खण्डित व्यक्तित्व से युक्त लगते हैं।

आज महानगरों में स्थित नारी के प्रेम और यौन-संबंधों में काफी परिवर्तन देखने को मिल रहा है। अधिकतर नारियों के प्रेम और यौन-संबंधों में भोगवासना के दर्शन होते हैं। "एक और पंचवटी" की साधवी इसी प्रकार की नारी लगती हैं। आज के स्पर्धात्मक युग में नारी अपने अधिकारों के लिए लड़ती-झगड़ती नजर आ रही है। अपने कॅरियर की प्राप्ति के लिए वह परिवार से तथा विवाह से भी मुक्त होकर रहना चाहती है। अपनी अभावग्रस्तता को पूर्ण करने के लिए वह स्वावलंबी बनना चाहती है। सभी प्रकार के घर-बाहर के शोषणों से मुक्ति पाना चाहती है। यह सभी बंधनों को तोड़कर स्वच्छंदी जीवन चाहती है। अन्सल के उपन्यासों की नारी पात्र मुक्ता, सुरेखा, साधवी, मधुरा उपर्युक्त तथ्यों पर पूरी उतरती हैं।

आज की नारी का विवाह के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण बढता जा रहा है। आज की नारी अंतर्जातीय, अंतरधर्मीय विवाह को स्वीकार करके दहेज का निषेध करती है। विवाह के प्रति नारी के ये दृष्टिकोण पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण लगते हैं। मुक्ता और सुरेखा का दृष्टिकोण इसी तरह का लगता है। परंतु ये दोनों नारियाँ परिस्थिति से मजबूर बनकर विवाह के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं।

आजकल नारी यौन-संबंधों के तौरतरीकों में भी काफी परिवर्तन देखने को मिलता है। विवाहोपरान्त प्रेमत्रिक में वह अटकी रहती है। वह अपने पति और प्रेमी के साथ यौन-संबंध स्थापित करती हैं। पारिवारिक रिश्तों की पवित्रता को भूलकर वह देवर के साथ भी संबंध स्थापित करती है। "एक और पंचवटी" की

साधवी इसी प्रकार की नारी है जिन्होंने अपने पति यतीन से ऊबकर अपने देवर विक्रम से यौन-संबंध स्थापित करके भारतीय नारी संस्कृति की पवित्रता को ताक पर लगाया है।

कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों के नारी पात्र अर्थाभाव की पूर्ति के लिए नये नये तरीके तलाशती हैं। अर्थप्राप्ति के लिए नौकरी करना चाहती हैं। आलोच्य उपन्यासों के नारी पात्र अस्तित्व के प्रति सतर्क दिखाई देते हैं। मुक्ता, सुरेखा, साधवी जैसे नारी पात्र वैयक्तिक अस्तित्व को बनाये रखने में संघर्षशील नजर आते हैं। ये नारियाँ परम्परागत बंधनों को तोड़ना चाहती हैं। ये नारेयाँ स्वतंत्रता का वरण करके जीवन यापन करती हैं। ये नारियाँ अपने-अपने निर्णयों पर दृढ नजर आती हैं। अपनी आजीविका के प्रति उनका अपना-अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण देखने को मिलता है। ये तीनों नारियाँ अपने-अपने परिवेश से पीड़ित हैं। ये नारियाँ जीवन संघर्ष करती-करती घुटनशीलता, कुंठा, संत्रास, निराशा, व्यथा, पीडा, बिखराव, शून्यता आदि से ग्रस्त रहती हैं। इतना होकर भी अपने अस्तित्व को बनाये रखने में प्रयत्नशील रहती हैं।

कुसुम अन्सल के आलोच्य उपन्यासों की कई घटनाओं में कुसुमजी के वैयक्तिक जीवन की घटनाओं के दर्शन होते हैं। इन उपन्यासों के माध्यम से कुसुमजी के विचारों को उनके नारी पात्र वहन करते हैं। नारी जीवनमूल्यों के परिवर्तन की दशा और दिशा को स्पष्ट करने का प्रयत्न यहाँ लेखिका ने किया है।

महिलाओं के उपन्यासों में नारियों का सामाजिक दायित्व का निर्वाह, सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा, रूढ़ियों का बहिष्कार, जातीय भावनाओं के संदर्भ की चर्चा, विवाह के संदर्भ में बदलते दृष्टिकोण, अधिक उम्र की अनब्याही युवतियों की स्थिति, विवाहपूर्व गर्भधारणा, दहेज की अभिशप्तता, दहेज के माध्यम से विवाह का सौदा, वैवाहिक जीवन की असंतुष्टता, विवाह की प्रथा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, दाम्पत्य संबंधों में सडांधता, बिना मर्जी से सम्पन्न वैवाहिक जीवन में घुटनशीलता, शैक्षिक असमानता के कारण वैवाहिक जीवन में उत्पन्न बाधा, अंतर्जातीय विवाह के प्रति आदर की दृष्टि, बहुपत्नीत्व तथा अनमेल विवाह के प्रति हेय दृष्टि, पुनर्विवाह का समर्थन,

संबंध विच्छेद से निर्मित अकेलेपन की पीड़ा, विधवा विवाह का समर्थन, नारी शरीर विक्रय के खिलाफ हेय दृष्टि, आदि अनेक तथ्य देखने को मिलते हैं। अन्सल के आलोच्य उपन्यासों में इनमें से कई तथ्यों के दर्शन होते हैं, जो आज के नारी समाज के यथार्थ चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

समाज परिवर्तन के साथ-साथ आज परिवार की नारियाँ नये मूल्यों का स्वीकार करने में धन्यता मान रही है, जिससे पुराने मूल्यों तथा परम्पराओं में टूटनशीलता आ रही है। परिवार में कुंठा, तलाक, तनाव, टूटन, बिखराव आदि स्थितियों का निर्माण हो रहा है। कुसुम अन्सलजी ने सभी कोनों से भारतीय परिवार को देखा है और परिवार टूटन की स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है। "एक और पंचवटी" का संयुक्त परिवार इसका अच्छा उदाहरण हो सकता है।

कुसुम अन्सलजी ने दाम्पत्य जीवन के बिखरे हुए तनावजन्य रंग प्रस्तुत करने में कुशलता से काम लिया है। नीरस दाम्पत्य जीवन पर भी कुसुमजी ने सफलता के साथ "एक और पंचवटी" के माध्यम से सोचा है।

संयुक्त परिवार में घर का मुखिया एक ज्येष्ठ पुरुष रहता है, जो घर की पूरी बागडोर को अपने कंधे पर रखकर परिवार को विशिष्ट प्रतिष्ठा प्रदान करा देता है। "एक और पंचवटी" के संयुक्त परिवार का मुखिया है विक्रम। यतीन का बड़ा भाई विक्रम शुरू से गृहस्थी का बोझ ढो रहा है। दो बहनों के हाथ उसने पीले कर दिये, उसने दोनों भाइयों की शादियाँ की। सारा परिवार उनके ही बनाये रास्ते पर चलता रहा। बड़े भाई के शब्द को अटल सत्य मानकर ग्रहण किया जाता है।

यहाँ साधवी-विक्रम, साधवी-यतीन, साधवी- परिवार के अन्य सदस्यों के संबंधों में असंगतियों के दर्शन होते हैं। "अपनी अपनी यात्रा" में माँ-बेटे के मानवी संबंधों पर प्रकाश डाला गया है। माँ-सुरेखा, माँ-यदु, वेदबाबू-प्रशांत, सुरेखा-शिव, सुरेखा-अवधेश, शिव-मंजरी के मानवीय संबंधों में असंगतियों के दर्शन होते हैं। "एक और पंचवटी" की साधवी पहले पत्नी फिर परित्यक्ता अब "कीप" रखैल बनकर जीवनयापन करने को बाध्य की जाती है। इससे इस उपन्यास के मानवीय

संबंध स्पष्ट होते हैं।

आज की महानगरीय नारी में अपनी अस्मिता के प्रति अतिरिक्त सजगता के दर्शन होते हैं। महानगरीय पढ़ी-लिखी नारी पति और घर के घेरे में सिमटकर घुटन महसूस करती है। "एक और पंचवटी" की साधवी ऐसी ही नारी है। वह कलात्मक रूचियाँ रखती हैं परंतु इस परिवार के वातावरण में उसकी रूचियाँ पल नहीं सकती है। उसका पति बिजनेसमैन है, जो परम्परागत भारतीय मूल्यों से जुड़ा होने के कारण वह परम्परागत नारी चाहता है, जिसका कोई व्यक्तित्व न हो, जो पति के इशारे पर चले। यहाँ दो जीवनमूल्यों की टकराहट दिखाकर बिखराव की स्थितियों को प्रस्तुत करने में कुसुमजी ने कमाल की सफलता पायी है। इस बिखराव से फिर जुडाव दिखाकर अपनी प्रयोगधर्मिता का परिचय भी दिया है।

कुसुमजी के उपन्यास मनोवैज्ञानिक तत्व को अधिक उभारते हैं। कुसुमजी चरित्रों के माध्यम से जीवन के विभिन्न पक्षों को देखती है, जीवन की उलझनों का हल खेजती है और उपन्यासों के माध्यम से जीवन के उस सच को खोजना चाहती है, जो उसकी अपनी वास्तविकता है। बचपन में मुक्ता पर हुई अनिल द्वारा जबरी, सतपाल बाबू द्वारा दैहिक शोषण, अपने अवचेतन में संजोयी उच्चवर्गीय जीवन जीने की इच्छा ने उसे कम्पलसिव आचरण की राह पर चलने को मजबूर किया। मुक्ता में पत्नी और माँ बन पाने की भावना का जन्म होता भी है पर संसार उसे उसके "स्व" की याद दिला देता है। वह खुद को गंदगी के धरातल पर की अभिनेत्री मानती है। उसके जीवन में कुछ पुरूष आये, कुछ दिन ठहरे चले गये। वह न विवाहिता का दर्जा प्राप्त करसकी न कुँवारी माता बनी, न विधवा। पुरूष के आकर्षण को उसने वर्जित किया। वह स्त्री न रहकर उस असहज "एबनार्मल" स्थिति को जाने लगी। अपने को वह "एयरपोर्ट" का नाम देती रही, जहाँ यात्री आते हैं, कुछ पल रूकते हैं, विश्राम करते हैं और चले जाते हैं। न तो उन यात्रियों को एयरपोर्ट का लगाव रहता है। इस समूची स्थिति के भीतर उसके मन, शरीर, भावनाओं का पदार्थीकरण हो जाता है। मुक्ता, सुरेखा, साधवी ऐसे ही नारी पात्र हैं, जो

मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रतिबद्ध लगते हैं।

कुसुम अन्सल के उपन्यासों में मनोविश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति की एक प्रमुख धारा प्रवाहित हुई है। इनके इन उपन्यासों पर फ्रायड के अवचेतन वाद का प्रभाव लक्षित होता है। नारी का मानसिक अंतर्द्वंद इनका प्रमुख विषय लगता है। इन्के उपन्यासों में पात्रों की आंतरिक दशाओं, उनके क्रियाकलापों, द्वंदों और मनोविकारों का सूक्ष्मता से चित्रांकन हुआ है।

कुसुम अन्सल के उपन्यासों की एक मात्र धारावाही कथा नहीं है। अनेक घटनाओं की सहायता से कथावस्तु का ताना-बाना बुनने का प्रयत्न सफलता के साथ कुसुमजी ने अपने तीनों आलोच्य उपन्यासों में किया है। जिससे उनकी प्रयोगात्मकता पर प्रकाश पडता है। कथावस्तु में परिवर्तित सामाजिक बोध पर खुल कर प्रकाश डालने का काम किया है। नारी संस्कृति के बदलाव को विशद किया है। कथावस्तु में पात्रों के मनोव्यापारोंको वाणी देने का काम किया है। कुसुमजी ने कथा के अत्यधिक मोह को टालकर मनोविश्लेषण तथा अस्तित्ववादी विचारप्रणाली के निचोड को अपने उपन्यासों की मुख्य आधारभूमि बनाकर कथातत्व के परम्परागत ढाँचे को नकार दिया है। कथा की अपेक्षा कुसुमजी ने नारी जीवन का यथार्थ, नारी की वेदना, उसके परिवेश की भयावहता, नारी के प्रबुद्ध चिंतन और संत्रास को विभिन्न परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया है।

अन्सलजी के आलोच्य उपन्यासों के पात्र एक प्रकार की विशेष स्थितियों में अवतीर्ण होते हुए देखने को मिलते हैं। इन पात्रों में मानव मन की सूक्ष्म गुत्थियाँ एवं जटिलताएँ देखने को मिलती हैं। मनोवैज्ञानिक चिंतन-प्रणाली की अभिव्यक्ति के साधन के रूप में लेखिका ने इन पात्रों का प्रयोग किया है। पात्रों के चेतन-अवचेतन मन के सूक्ष्म अंतर्व्यापारों को विश्लेषित करने का स्तुत्य प्रयत्न किया है। परिवेश की भयावहता से उत्पन्न पात्रों की मानसिक विकृतियाँ उनके अस्तित्व को खो जाना और उनके -"इगो" का टूटकर बिखर जाना आदि अनेक कारणों से कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों के पात्र एबनॉर्मल हो गये हैं। कुसुमजी ने इस एबनार्मल मनःस्थिति को सूक्ष्मता को अपने आलाच्य उपन्यासों के पात्र मुक्ता, सुरेखा, साधवी, सतपाल, सागर, अक्षय, शिव

अवधेश, यतीन, विक्रम आदि पात्रों के माध्यम से इसे चित्रित किया हैं। लगता है कि कुसुमजी ने अपने उद्देश्य के अनुरूप पात्रों को ढालने का सफल प्रयत्न किया है। कुसुमजी ने परिवेश की भयावहता से उबरने तथा खोये हुए अस्तित्व की पुनर्स्थापना के लिए कुंठित और बौने पात्रों का निर्माण भी किया है। मुक्ता, सुरेखा, साधवी आदि सब नारी पात्र अपने-अपने परिवेश से पीड़ित होकर कुंठित और बिखरे हुए लगते हैं। लगता है कि ये पात्र क्षण में जीने की ललक को लेकर आते हैं और परिवेश के विस्तृत फलक पर खो जाते हैं। बिखर जाते हैं। कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों के सभी पात्र मानसिक संसार में भटकते हुए नजर आते हैं। ये पात्र समाज के साथ संघर्ष न करके अपनी ही आंतरिक दुनिया से लडते हैं। इन पात्रों के द्वारा परस्पर विरोधी विचार संघर्ष, तनाव, कुंठा, संत्रास, चिंता, आशंका आदि को अभिव्यक्ति मिल चुकी है। लेखिका ने इन पात्रों के माध्यम से खंडित जीवन की मानसिक दुनिया का अनुसंधान किया है। मृत्यावलोकन, चेतनाप्रवाह, पूर्वदीप्ति, सम्मोहन, अन्तर्विवाद, अंतर्द्वंद्व आदि के द्वारा कुसुमजी ने अपने पात्रों अचेतन संसार को उकेरने का स्तुत्य प्रयत्न किया है।

कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों के संवादों में पात्रों के मन के अत्यंत जटिल भावबोधों के दर्शन होते हैं। इन उपन्यासों के संवाद युगीन संदर्भों को उजागर करते हैं। संवादों में घनिभूतता के दर्शन भी होते हैं। आधुनिक जीवन की जटिलताओं, मानसिक अंतर्द्वंद्वों, कुंठाओं, अकेलेपन की पीडाओं आदि का परिचय हमें कुसुमजी के आलोच्य उपन्यासों के संवादों से होता हैं। ये संसार मानसिक संवेदना की सघनता को प्रस्तुत करते हैं। "उसतक" में मुक्ता-सतपाल, "अपनी अपनी यात्रा" में सुरेखा-शिव, सुरेखा-अवधेश, "एक और पंचवटी" में साधवी-विक्रम, साधवी-यतीन के संवाद इसी कसौटी पर पूरे उतरते हैं।

कुसुमजी ने इन आलोच्य उपन्यासों के माध्यम से महानगरीय वातावरण में पली उच्चविद्याविभूषित नारी के विविधांगी शोषण के पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास, गोरखपुर, बस्ती कानपुर, के वातावरण

को रूपायित किया है। "उस तक" की मुक्ता का दिल्ली महानगर के एक कोने में स्थित आवास स्थान, उसका पारिवारिक वातावरण, इस आवासस्थान के इर्द-गिर्द का वातावरण, दिल्ली और कलकत्ता के फ्लैट का वातावरण, सतपाल बाबू के दफ्तर का वातावरण परिवेशजन्य पीडा से ओतप्रोत लगता है। ऐसे वातावरण में मुक्ता की मानसिकता कुंठा, यौन-संबंध, संत्रास, पीडा, अकेलेपन आदि मोडों पर से गुजरती हैं।

"अपनी अपनी यात्रा" में दिल्ली, मद्रास का महानगरीय वातावरण चित्रित किया है। शिव का दफ्तर, शिव का घर, शिव की पत्नी मंजरी के सान्निध्य में घर का वातावरण, मद्रास के सागर किनारे का वातावरण आदि के साथ साथ सुरेखा की मानसिक के चढ़ावों-उतारों को चित्रित किया है। "एक और पंचवटी" में संयुक्त परिवार का परिवेश में साधवी की घुटन, बस्ती के बंगले का वातावरण, गोरखपुर का वातावरण आदि के माध्यम से साधवी के भावबोध को प्रस्तुत किया है। वातावरण जिंदा है और पात्रों के मनोभाव के अनुकूल लगता है। वातावरण के सृजन में अन्सल ने कमाल की सफलता प्राप्त की है।

महानगरीय नारी जीवन की मानसिकता पर प्रकाश डालना, उच्चविद्याविभूषित महानगरीय दैहिक शोषण पर चिंतन करना, महानगरीय नारी के परिवर्तित यौन-संबंधों पर दृष्टिक्षेप करना, महानगरीय टूटनशील मानवी रिश्तों को नजरांदाज करना, विवाह संस्था तथा पारिवारिक टूटन पर सोचना, आर्थिक अभाव से ग्रस्त महानगरीय नारियों की मानसिक खींचातानी को उभारना, बनते-बिगड़ते तनावपूर्ण पति-पत्नी संबंधों की पोल खोलना, इन तनावों के पीछे की कारणमीमांसा को उजागर करना, महानगरीय नारी जीवन की समस्याओं पर हल ढूँढना, नारी को आत्मनिर्भर, स्वावलंबी बनाने के लिए कई संकेत पेश करना, नौकरी पेशा नारी के बाह्य संबंधों पर दृष्टिक्षेप करना, परिवर्तित नारी जीवनमूल्य और भारतीय परिवर्तित नारी संस्कृति पर चिंता प्रकट करना, नाते-रिश्ते के ढहते हुए संबंधों को नजरांदाज करना आदि अनेक उद्देश्यों को सामने रखकर कुसुमजी ने "उसतक", "अपनी अपनी यात्रा", "एक और पंचवटी" उपन्यासों का सृजन किया है। इससे साठोत्तरी महिला उपन्यासकारों में कुसुमजी

का योगदान महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

अन्सल की रचनाओं में वर्णनात्मक, विवरणात्मक, कथात्मक, पूर्वदीप्ति, विश्लेषणात्मक, मनोविश्लेषणात्मक, प्रतीकात्मक, सांकेतिक, संवादात्मक, बिंबात्मक आदि शैलियों के दर्शन होते हैं। अंग्रेजी, उर्दू-फारसी, पंजाबी आदि भाषाओं के शब्द उनके उपन्यासों में मिलते हैं।

संक्षेप में कुसुमजी ने कथावस्तु को गौण स्थान देकर चरित्रों की विविध प्रकार की मनःस्थितियों का सूक्ष्मता के साथ चित्रांकन किया है। कुसुमजी ने उपन्यासों के शीर्षक में प्रमीकात्मकता के दर्शन कराये हैं। "एक और पंचवटी" शीर्षक प्रतीकात्मक लगता है। इसमें आधुनिक युगबोध के दर्शन "पंचवटी के पुराने प्रतीक के माध्यम से स्पष्ट किये हैं। शिल्प की दृष्टि से भी कुसुमजी के उपन्यास प्रयोगधर्मी सिद्ध हो सकते हैं।